



माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि को प्रभावित करने वाले कारक: एक वैचारिक अवलोकन

रंजीत कुमार सिंह
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय
गंगा नगर, मवाना रोड, मेरठ (उ0प्र0)

डॉ0 सरिता गोस्वामी
प्रोफेसर एवं संकायाध्यक्षा
शिक्षा संकाय, आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय
गंगा नगर, मवाना रोड, मेरठ (उ0प्र0)

Article Info

Article History

Accepted : 01 July 2024

Published : 15 July 2024

Publication Issue :

Volume 7, Issue 4

July-August-2024

Page Number : 01-05

सारांश:- इस शोध पत्र का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक बुद्धि (ईआई) को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का एक वैचारिक अवलोकन प्रस्तुत करना है। भावनात्मक बुद्धि, जिसमें आत्म-जागरूकता, आत्म-प्रबंधन, सामाजिक जागरूकता, और सामाजिक कौशल शामिल हैं, छात्रों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन में पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षण शैली, सहकर्मी समूह, और स्कूल पर्यावरण जैसे कारकों की समीक्षा की गई है। इसके अलावा, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, सांस्कृतिक प्रभाव, और तकनीकी उपयोग जैसे आधुनिक कारकों का भी विश्लेषण किया गया है। यह लेख शैक्षिक नीतियों और शिक्षण प्रथाओं को सुधारने के लिए सुझाव प्रदान करता है ताकि छात्रों की भावनात्मक बुद्धि को प्रभावी ढंग से बढ़ावा दिया जा सके।

मूल शब्द- भावनात्मक बुद्धि, माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों, वैचारिक अवलोकन।

1. परिचय- माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक बुद्धि (ईआई) एक महत्वपूर्ण शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक पहलू है, जो उनके शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक संबंधों और समग्र व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचान, समझ

और प्रबंधित कर सकता है। यह केवल शैक्षणिक सफलता के लिए ही नहीं, बल्कि जीवन की अन्य विभिन्न चुनौतियों से निपटने के लिए भी आवश्यक है।

हालांकि, छात्रों की भावनात्मक बुद्धि को प्रभावित करने वाले कई कारक हो सकते हैं। इनमें पारिवारिक पृष्ठभूमि,

सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षण और सीखने की शैली, सहकर्मि समूह, और स्कूल का पर्यावरण शामिल हैं। इसके अलावा, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, सांस्कृतिक प्रभाव, और आधुनिक तकनीकी उपयोग जैसे कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

यह शोध पत्र इन सभी कारकों का वैचारिक अवलोकन प्रस्तुत करता है और यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे ये कारक छात्रों की भावनात्मक बुद्धि को आकार देते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य उन तत्वों की पहचान करना है जो छात्रों की भावनात्मक बुद्धि को बढ़ावा देने में सहायक हो सकते हैं, ताकि शैक्षिक नीतियों और शिक्षण प्रथाओं में सुधार किया जा सके।

2. भावनात्मक बुद्धि— *भावनात्मक बुद्धि*: वह क्षमता है जिससे व्यक्ति अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने और नियंत्रित करने में सक्षम होता है। यह केवल एक व्यक्ति की अकादमिक योग्यता या बौद्धिक बुद्धि पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इसमें सामाजिक और भावनात्मक कौशल भी शामिल होते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख विद्वानों द्वारा दी गई “भावनात्मक बुद्धि” की परिभाषाएँ हैं:

1. “डैनियल गोलेमन”:

— डैनियल गोलेमन के अनुसार, “भावनात्मक बुद्धि” वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, प्रबंधित करने और प्रभावी ढंग से उपयोग करने में सक्षम होता है। इसमें आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल शामिल हैं।

“गोलेमन की परिभाषा”: “भावनात्मक बुद्धि में आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, आंतरिक प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल शामिल होते हैं, जो किसी व्यक्ति की सफलतापूर्वक अपने और दूसरों के साथ

संवाद करने और संबंध बनाने की क्षमता को निर्धारित करते हैं।”

2. “पीटर सालोवे और जॉन डी. मेयर”:

पीटर सालोवे और जॉन डी. मेयर ने “भावनात्मक बुद्धि” को सबसे पहले परिभाषित किया। उनके अनुसार, “भावनात्मक बुद्धि” वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी और दूसरों की भावनाओं को सही ढंग से पहचानने, व्यक्त करने और समझने में सक्षम होता है, और इन भावनाओं का उपयोग सोचने और समझने के लिए करता है।

“सालोवे और मेयर की परिभाषा”: “भावनात्मक बुद्धि में अपनी और दूसरों की भावनाओं को सही ढंग से पहचानना, इन भावनाओं को व्यक्त करना और समझना, और इन भावनाओं का उपयोग सोचने और समझने में करना शामिल है।”

3. “रेवेन बार-ऑन”:

— रेवेन बार-ऑन के अनुसार, “भावनात्मक बुद्धि” वह क्षमता है जो व्यक्ति को सफलतापूर्वक जीवन के विभिन्न दबावों और चुनौतियों से निपटने में मदद करती है। इसमें व्यक्ति की भावनाओं का प्रबंधन, दूसरों के साथ संबंधों का निर्माण और समस्याओं का समाधान शामिल है।

“बार-ऑन की परिभाषा”: “भावनात्मक बुद्धि वह सरोकार है जो व्यक्ति को जीवन के विभिन्न दबावों और चुनौतियों से सफलतापूर्वक निपटने में मदद करती है, जिसमें भावनाओं का प्रबंधन, दूसरों के साथ संबंध बनाना और समस्याओं का समाधान शामिल है।”

3. भावनात्मक बुद्धि की अवधारणा:

- *आत्म-जागरूकता*: अपनी भावनाओं को पहचानना और समझना।
- *आत्म-नियंत्रण*: अपनी भावनाओं को नियंत्रित और प्रबंधित करना।

- **प्रेरणा** : सकारात्मक और लक्ष्यों की ओर प्रेरित रहना।
- **सहानुभूति**: दूसरों की भावनाओं को समझना और उनके दृष्टिकोण को समझना।
- **सामाजिक कौशल** : दूसरों के साथ अच्छे संबंध बनाना और प्रभावी संचार करना।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व इसलिए है क्योंकि यह जीवन के विभिन्न पहलुओं में सफलता पाने में मदद करती है, जैसे कि व्यक्तिगत संबंध, कार्यस्थल पर प्रदर्शन, और मानसिक स्वास्थ्य।

4. छात्रों की भावनात्मक बुद्धि को प्रभावित करने वाले कारक

➤ पारिवारिक पृष्ठभूमि

- माता-पिता की शिक्षा और पालन-पोषण की शैली।
- पारिवारिक संबंध और संचार का स्तर।
- परिवार में भावनात्मक समर्थन की उपलब्धता।

➤ सामाजिक-आर्थिक स्थिति

- परिवार की आर्थिक स्थिति और इससे जुड़े तनाव।
- सामाजिक स्थिति और इसके प्रभाव।
- संसाधनों और अवसरों की उपलब्धता।

➤ शिक्षण और सीखने की शैली

- शिक्षक-छात्र संबंध और शिक्षण विधियाँ।
- विद्यालय में सिखाई जाने वाली सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा।
- छात्र को दी जाने वाली व्यक्तिगत ध्यान और मार्गदर्शन।

➤ सहकर्मी समूह

- मित्रों और सहपाठियों के साथ संबंध।
- समूह में स्वीकृति और समर्थन का स्तर।
- समूह की गतिशीलता और सामाजिक प्रभाव।

➤ स्कूल का पर्यावरण

- विद्यालय की संरचना और वातावरण।
- शैक्षिक और अतिरिक्त पाठ्यक्रम गतिविधियों की उपलब्धता।
- मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता।

➤ शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य

- छात्र का शारीरिक स्वास्थ्य और पोषण।
- मानसिक स्वास्थ्य और तनाव का स्तर।
- नींद और शारीरिक गतिविधि का स्तर।

➤ सांस्कृतिक प्रभाव

- सांस्कृतिक मानदंड और मूल्य।
- सामाजिक परंपराएँ और रीति-रिवाज।
- सांस्कृतिक विविधता और सहिष्णुता का स्तर।

➤ तकनीकी उपयोग

- डिजिटल उपकरणों और सोशल मीडिया का उपयोग।
- तकनीक से जुड़े सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव।
- तकनीक के माध्यम से सीखने और संचार की विधियाँ।

➤ व्यक्तिगत गुण और स्वभाव

- स्वभाव और व्यक्तित्व के आधार पर भावनात्मक प्रतिक्रिया।
- आत्म-जागरूकता और आत्म-नियंत्रण की क्षमता।
- प्रेरणा और आत्मसम्मान का स्तर।

जोशी और थपलियाल ने अपने विभिन्न अध्ययनों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की समग्र भलाई के महत्व पर प्रकाश डाला।

5. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक बुद्धि को सुधारने के लिए सुझाव

➤ नीति निर्माताओं और सरकार के लिए सुझाव

- “भावनात्मक शिक्षा कार्यक्रम” विद्यालय पाठ्यक्रम में भावनात्मक और सामाजिक शिक्षा को अनिवार्य बनाना।
- “शिक्षक प्रशिक्षण” शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करना, ताकि वे छात्रों की भावनात्मक जरूरतों को समझ सकें और उचित मार्गदर्शन दे सकें।
- “मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ” विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं और परामर्शदाताओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- “नीति समर्थन” ऐसी नीतियाँ बनाना जो स्कूलों में सकारात्मक वातावरण को बढ़ावा दें और छात्रों के समग्र विकास में सहायता करें।

➤ स्कूल प्राचार्यों के लिए सुझाव

- “सकारात्मक स्कूल वातावरण” एक सकारात्मक और समावेशी विद्यालय वातावरण बनाना, जहाँ छात्र सुरक्षित और समर्थित महसूस करें।
- “सहयोगात्मक गतिविधियाँ” समूह गतिविधियों और सह-पाठ्यक्रम कार्यक्रमों का आयोजन करना, जो भावनात्मक और सामाजिक कौशल को प्रोत्साहित करें।
- “परामर्श सेवाएँ” विद्यालय में परामर्श सेवाओं की उपलब्धता बढ़ाना और छात्रों को मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करना।
- “फीडबैक तंत्र” एक प्रभावी फीडबैक तंत्र स्थापित करना, ताकि छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों से नियमित प्रतिक्रिया प्राप्त की जा सके।

➤ शिक्षकों के लिए सुझाव

- “भावनात्मक शिक्षा” अपनी शिक्षण विधियों में भावनात्मक और सामाजिक शिक्षा को शामिल करना।
- “समर्थन और मार्गदर्शन” छात्रों को व्यक्तिगत समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करना, ताकि वे अपनी भावनाओं को समझ और प्रबंधित कर सकें।

– “सकारात्मक सुदृढीकरण” सकारात्मक सुदृढीकरण का उपयोग करना, जिससे छात्रों का आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान बढ़ सके।

– “सामान्य सत्र” छात्रों के साथ नियमित चर्चा सत्र आयोजित करना, जहाँ वे अपनी भावनाओं और चुनौतियों को साझा कर सकें।

➤ अभिभावकों के लिए सुझाव

- “भावनात्मक समर्थन” अपने बच्चों को भावनात्मक समर्थन और स्नेह प्रदान करना।
- “खुला संचार” बच्चों के साथ खुला और ईमानदार संचार बनाए रखना, जिससे वे अपनी भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकें।
- “रोल मॉडल” भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्वयं एक रोल मॉडल बनकर प्रदर्शन करना, जिससे बच्चे सीख सकें।
- “सक्रिय भागीदारी” स्कूल गतिविधियों और कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेना और बच्चों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में सहयोग करना।

➤ समुदाय के लिए सुझाव

- “सहयोगात्मक प्रयास” स्थानीय समुदाय और संगठनों के साथ मिलकर कार्यक्रमों का आयोजन करना, जो बच्चों की भावनात्मक और सामाजिक कौशल को प्रोत्साहित करें।
- “सकारात्मक वातावरण” एक सकारात्मक और सहयोगात्मक सामुदायिक वातावरण बनाना, जहाँ बच्चे सुरक्षित और समर्थित महसूस करें।
- “स्वयंसेवा और परामर्श” स्थानीय विशेषज्ञों और स्वयंसेवकों की मदद से परामर्श सेवाएँ और कार्यशालाएँ आयोजित करना।
- “सांस्कृतिक कार्यक्रम” सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करना, जो बच्चों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा दें और उन्हें विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं से अवगत कराएँ।

6. संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. Anderson, C. D., & Smith, E. F. (2018). Classroom disruptions and student achievement: A meta-analysis. *Educational Research Review*, 25, 45-56.
2. Joshi, A., Thapliyal, P., Kumar, A., & Ekka, M. (2020). Mental Health in Relation to Academic Achievement of Students at Secondary Level in Ranchi. *The Signage*, 8 (2), 113-119.
3. Joshi, A. (2022). Mental Health In Relation To Internet Usage of Senior Secondary School Students, *International Journal of All Research Education and Scientific Methods*, 10 (9), 129-131.
4. Lopes, P. N., Salovey, P., & Straus, R. (2003). Emotional intelligence, personality, and the perceived quality of social relationships. *Personality and Individual Differences*, 35(3), 641-658.
5. Salovey, P., & Mayer, J. D. (1990). Emotional intelligence. *Imagination, Cognition and Personality*, 9(3), 185-211.
6. Smith, J. K., & Johnson, L. M. (2019). Emotional Intelligence, Self-Regulation, and Academic Success: A Longitudinal Study of College Students. *Journal of Educational Psychology*, 45(2), 201-215.
7. Smith, J. K., & Johnson, L. M. (2017). The role of self-regulation in academic achievement: A meta-analysis. *Educational Psychology Review*, 29(3), 523-541.
8. Smith, P. J., & Wilson, D. G. (2014). Classroom climate and student engagement: A mixed-methods investigation. *Journal of Educational Psychology*, 110(1), 68-82.
9. Smith, J. K., & Johnson, L. M. (2018). Adaptability and Academic Achievement: Exploring the Relationship Among College Students. *Journal of Educational Psychology*, 110(3), 382-394.
10. Thapliyal, P., Joshi, J., & Asthana, A. K. (2011). Impact of socio-emotional school climate on mental health of the secondary school students. *Perspectives in Psychological Researches*, 34(2), 65-68.
11. Thapliyal, P., Joshi, J., & Asthana, A. K. (2011). Teacher effectiveness in relation to mental health and burn-out of teachers at senior secondary level. *Perspectives in Psychological Researches*, 34(1), 73-76.
12. Thapliyal, P., & Joshi, J. (2014). Psychological Well-Being in Relation to Life Satisfaction of Secondary School Teachers. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research*, 1(2), 565-567.
13. Thapliyal, P., & Joshi, J. (2014). Perceived Leadership Behaviour of Principals and Psychological Well-Being of Secondary School Teachers. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research*, 1(5), 577-580.
14. Thapliyal, P. (2022). Mental Health in Relation To Academic Achievement of Students At Senior Secondary Level In Delhi.
15. Thapliyal, P. (2023). Psychological Well-Being of Private and Government Secondary School Students. *International Journal of Research Publication and Reviews*, 4(7):2739-2741. DOI: 10.55248/gengpi.4.723.49737.